निजामुद्दीन औलिया

सिराज अनवर

बच्चों की कहानियां



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और ख़तरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े—बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

संपादक : मूलशंकर भट्ट बच्चों की कहानियां—१७

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया

सिराज अनवर

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

चित्रकार :
दीनेश शाह

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जि, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१
३, गांधी सागर ईस्ट,
नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८

१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस,
१०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग,
बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग,
रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००९
६३१-७, महात्मा गांधी रोड,
एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

हजरत निजामुद्दीन औलिया

अगर तुमसे पूछा जाय कि बड़ा आदमी किसे कहते हैं तो शायद तुम यही जवाब दोगे– उसे, जिसके पास अनगिनत दौलत, जायदाद हो।

लेकिन यह बात ठीक नहीं है।

एक साधारण-सा फकीर भी बड़ा आदमी हो सकता है। ऐसा फकीर जो आप भूखा रहकर, दूसरों को खिलाये और उनकी मदद करे। दुनिया के हर आदमी को अपना भाई माने और सबसे प्यार करे। ऐसा आदमी बादशाहों, अमीरों से भी कहीं ज्यादा बड़ा माना जाता है और यह कहानी ऐसे ही एक "बड़े आदमी" की है।

सन १२३६ के किसी अच्छे महीने में, उत्तर प्रदेश के मशहूर शहर बदायूं में, एक साधारण लेकिन नेक और सज्जन आदमी सैयद अहमद के घर, एक सुन्दर लड़का पैदा हुआ। उसका नाम सैयद मुहम्मद रखा गया।

यह बच्चा अभी छोटा ही था कि बाप अल्लाह को प्यारे हो गये।

मां बीबी जुलेखा ने सैयद मुहम्मद और उसकी बड़ी बहन को आप ही पाला। वे इतनी स्वाभिमानी थीं कि उन्होंने किसी से मदद नहीं ली। खुद ही मेहनत करके सूत काता करतीं और नौकरानी उसे बाजार में जाकर बेंच आती। फिर भी इतने पैसे तो नहीं मिलते कि आराम से गुजारा हो सके।

दोनों बच्चों को बहलाने के लिए वे कह देतीं कि हम इन दिनों अल्लाह मियां के मेहमान हैं। बच्चे जिद न करते और

भूखे पेट, यह सोच खुश होकर सो जाते कि वे अल्लाह मियां के मेहमान हैं।

उस वक्त बदायूं में बड़े लायक और पढ़े-लिखे लोग रहा करते थे। इनकी विद्या की चर्चा दूर-दूरतक थी। सैयद मुहम्मद ऐसे ही एक विद्वान मौलाना अलाउद्दीन के शिष्य बन गये और तभी से उनको निजामुद्दीन यानी धर्म को ठीक चलानेवाला कहा जाने लगा।

जब उन्होंने अपनी पढ़ाई का एक भाग पूरा कर लिया तो मां ने बड़े प्यार और गर्व से अपने हाथ से काते सूत की पगड़ी बुनी और उस्ताद ने यह पगड़ी, निजामुद्दीन के सिर पर बांध दी।

शिक्षा पूरी कर लेने के बाद निजामुद्दीन दिल्ली आ गये।

यहां मौलाना शम्सुलमुल्क और मौलाना कमालुद्दीन उनके उस्ताद बने। उस समय अरबी-फारसी की शिक्षा के साथ ही धर्म और जाति की शिक्षा को भी बड़ा दर्जा दिया जाता था। जाति, धर्म की अच्छी-अच्छी बातें बतानेवालों का सब बड़ा आदर करते थे।

निजामुद्दीन की शिक्षा वैसे तो पूरी हो चुकी थी लेकिन वे समझते थे कि जबतक अल्लाह के रास्ते पर हाथ पकड़कर चलानेवाला कोई न हो, शिक्षा अधूरी रहेगी।

वे इसकी खोज में अजोधन पहुंचे। आजकल यह जगह पाकिस्तान के जिला साहिवाल में पाक पट्टन के नाम से मशहूर है।

उस वक्त वहां एक बुजुर्ग हजरत बाबा फरीदुद्दीन रहते थे निजामुद्दीन उनके चेले बन गये, और उनके पास रहकर जाति, धर्म की शिक्षा लेने लगे।

हजरत बाबा फरीदुद्दीन के पास एक बहुत बड़ा मकान था जिसे "जमाअत-खाना" कहते थे। इस मकान में उन्होंने निजामुद्दीन के लिए चारपाई पर सोने का इंतजाम कर दिया था। मगर निजामुद्दीन ने यह कहकर मना कर दिया कि मुझसे बड़े, योग्य विद्यार्थी तो जमीन पर सोते हैं। मैं चारपाई पर कैसे सो सकता हूं? इस बात से पता चलता है कि वे अपने गुरू और साथियों का कितना आदर करते थे।

एक दिन निजामुद्दीन का एक दोस्त उनसे मिलने बदायूं से अजोधन आया।

गुरू की आज्ञा लेकर निजामुद्दीन अपने दोस्त के लिए थाली में खाना लेकर

आये। दोस्त अफसोस करने लगा और कहने लगा कि तुमने इतनी अच्छी शिक्षा पायी और फिर भी तुम्हें नौकरों की तरह काम करना पड़ रहा है। कहीं और होते तो कितनी ऊंची जगह पर होते।

निजामुद्दीन यह सुनकर मुस्कराये। उन्होंने कहा, "यह तो अपने-अपने मानने की बात है। मुझे तो इसमें कोई बुराई नहीं दिखायी देती।" बाद में वे खाली बर्तन वापस रखने भी स्वयं ही गये। उन्हें न तो इसमें कोई शर्म लगती और न ही दोस्त की बातों का उन्होंने बुरा माना।

उनकी ऐसी नेक आदतों के कारण ही बहुत से विद्यार्थी उनसे जलने लगे। एक ने हजरत बाबा फरीदुद्दीन से उनकी शिकायत की कि हम तो आपका इतना आदर और इतनी सेवा करते हैं लेकिन आप न जाने क्यों निजामुद्दीन से ही खुश रहते हैं। आखिर इसका कोई तो कारण होगा?

गुरू ने जवाब दिया कि निजामुद्दीन सूखी लकड़ियां अपने साथ लाये थे। मैंने चिनगारी रखकर फूंक मार दी और प्रकाश फैल गया। तुम्हारी लकड़ियां ही गीली हैं। आग ही नहीं पकड़ती तो मैं क्या करूं?

हजरत बाबा फरीदुद्दीन के यहां हजरत निजामुद्दीन की शिक्षा पूरी हो गयी।

उनकी हालत यह थी कि एक बार उनकी बूढ़ी बहन ने उनके कुर्ते को फटा देखकर कहा कि लाओ, मैं पैबन्द लगा दूं और धो डालूं। लेकिन हजरत निजामुद्दीन के पास एक जोड़े के अतिरिक्त कोई और चादर थी ही नहीं कि जिसे ओढ़कर वे बैठ जाते और बहन पैबन्द लगा देतीं।

आपका यह नियम था कि ज्यादा सामान नहीं रखना। कहीं से अगर कोई चीज आ भी जाती तो उसी वक्त वे उसे गरीबों में बांट देते थे।

कुछ दिनों बाद हजरत निजामुद्दीन को उनके गुरू ने अपना उत्तराधिकारी बना दिया। उन्हें अरबी भाषा में उपदेश लिखकर दिया। जिसमें कहा गया था कि वे स्वयं सीधे रास्ते पर चलेंगे और लोगों को भी सीधा रास्ता दिखायेंगे। दुनिया की झंझटों से दूर रहेंगे। मन की बात को अक्ल से तौलेंगे, और अकेले रहेंगे ताकि बुरे कामों से बचे रहें। यह उपदेश देने के बाद हजरत निजामुद्दीन को गुरू ने आज्ञा दी कि वे दिल्ली चले जायें।



आप भूखा रहकर दूसरों को खिलाने में उन्हें बड़ी खुशी होती थी।

दिल्ली आने के बाद हजरत निजामुद्दीन कई-कई दिन बिना खाये-पीये रहे। उनके चेलों का भी यही हाल था। इतना होने पर भी वे सिर्फ खुदा से मदद मांगते।

बादशाह बलबन को जब यह पता चला तो उसने आपको कोई गांव देना चाहा ताकि उसकी आमदनी से आपका व शिष्यों का गुजारा चल सके। लेकिन हजरत ने अपने स्वाभिमान के कारण यह सहायता लेने से इन्कार कर दिया। किसी समय अगर आपको खाना मिल भी जाता तो यह खाना रोटी के सूखे टुकड़ों को छोड़कर और कुछ न होता। ये सूखे टुकड़े भी कई दिनों की भूख के बाद मिलते थे। आप अपने चेलों के साथ वे सूखे टुकड़े खाते और खुदा को धन्यवाद देते।

कई बार ऐसी भी हुआ कि किसी भूखे फकीर ने वे सूखे टुकड़े बचे हुए समझकर ले लिए। हजरत निजामुद्दीन ने उसे कुछ न कहा और अपने चेलों को बताया कि उनसे ज्यादा भूखे को टुकड़ों की जरूरत थी, इसलिए वह ले गया। इस बात से तुम अनुमान लगा सकते हो कि आप भूखा रहकर दूसरों को खिलाने के बाद, वे कितने खुश होते थे।

हजरत निजामुद्दीन दिल्ली में कई मकानों में रहे और अंत में अपनी किताबों के साथ गयासपुर आ गये। यह जगह हुमायूं के मकबरे के पास ही, उत्तर की तरफ थी। जमना नदी के किनारे छप्परों और कच्चे मकानों की एक छोटी-सी बस्ती को गयासपुर कहा जाता था। बस्ती के दक्षिण में किलोखड़ी गांव था जो आज भी वहां पर है।

आपके एक चेले जियाउद्दीन वकील ने यहां एक बहुत बड़ी और सुंदर इमारत बनवा दी थी जिसे जमाअतखाना कहा जाता है। आप यहां बड़ी तंगी से जीवन बिताते थे। इसके बाद भी अगर कोई आदमी आपको तोहफा या कपड़ा या खाने का कुछ सामान दे जाता तो आप उसे उसी समय गरीबों में बांट दिया करते थे।

जब आप अजोधन में थे, तो एक दिन सब चेलों ने हजरत बाबा फरीदुद्दीन की आज्ञा से मिलजुलकर खाना पकाया। सभी कुछ-न-कुछ सामान लाये।

जब खाना तैयार हुआ तो देखा कि नमक है ही नहीं। हजरत निजामुद्दीन ने अपनी पगड़ी गिरवी रखकर नमक ले लिया।

गुरू को जब इस बात का पता चला तो वे बहुत नाराज हुए। उन्होंने कहा कि अल्लाहवालों को अपना पेट भरने या सिर्फ मजा करने के लिए कर्ज नहीं लेना चाहिए। इससे अच्छा तो यह है कि हम भूखे रह लें। हजरत निजामुद्दीन ने यह आदेश अपनी गांठ में बांध लिया और हमेशा इस पर चले।

हजरत निजामुद्दीन ने कोई खजाना जमा नहीं किया। कोई जायदाद नहीं खरीदी। विवाह नहीं किया और न कोई सरकारी पद ही लिया। जमाअतखाने का लाखों रुपये साल का खर्च केवल अल्लाह के भरोसे पर चलता था।

सुबह से शामतक आनेवाले हजारों आदमी तरह-तरह के तोहफे और भेंट दे जाते थे। सेवक थोड़ी-थोड़ी देर बाद तोहफों के ढेर हजरत के सामने रख जाते। आपका मन दुनिया की हर चीज से भर चुका था। हीरे-जवाहरात और कंकड़ आपके लिए एक जैसे थे। आप सोने-चांदी के सिक्कों का ढेर देखकर बहुत रोते और सेवकों को आज्ञा देते कि सब सामान तुरंत जरूरतमंदों में बांट दो। जब सामान खत्म हो जाता तो आप बहुत खुश होते।

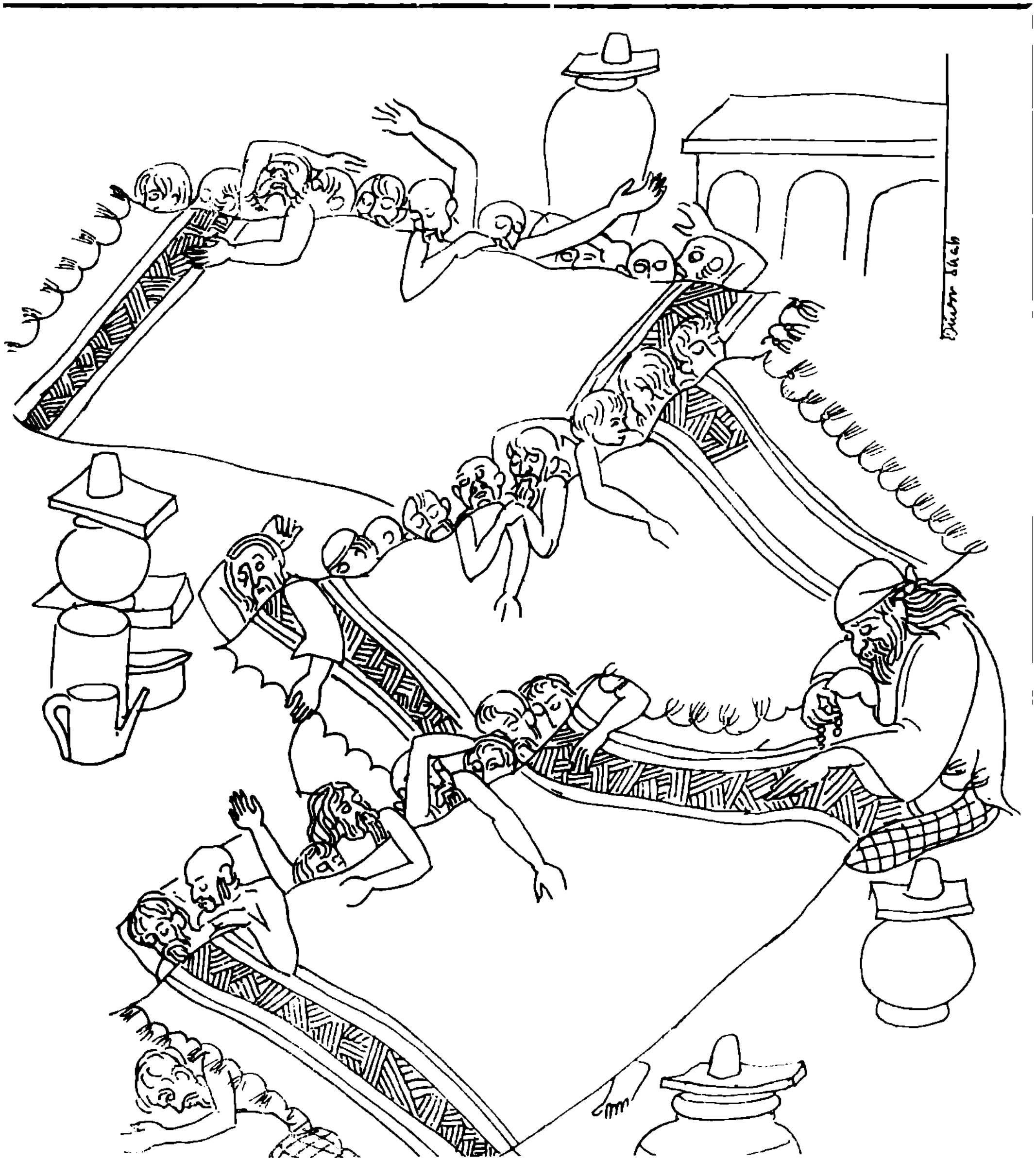
एक बार किसी ने आपको एक सुंदर चाकू भेंट में दिया। आपने कहा, "यह काटने की चीज है। मुझे सुई दो क्योंकि मैं काटता नहीं, जोड़ता हूं।" जीवनभर हजरत निजामुद्दीन लोगों को जोड़ने का काम करते रहे।

हजरत निजामुद्दीन हमेशा रोजा रखा करते थे। रोजा खोलने से पहले आप खाना या तो लौटा देते या गरीबों में बंटवा देते।

एक बार आपके नौकर अब्दुर्रहीम ने कहा कि आप न सुबह के वक्त कुछ खाते हैं, न शाम के वक्त। आपका पेट पिचक-कर रह गया है। खायेंगे नहीं तो कैसे चलेगा।

आप यह सुनकर रोने लगे और बोले, "हजारों गरीब और बेसहारा, मस्जिदों के कोनों और दूकानों की पटरियों पर भूखे पेट सोते हैं। उनके होते हुए मैं पेटभर खाना कैसे खाऊं ?"

यही नहीं, आपके जमाअतखाने में जो मेहमान आते थे उन्हें अनगिनत रजाइयां ओढ़ने के लिए दी जाती थीं। आपने कई गज चौड़ा एक कम्बल बनवा रखा था, जिसमें दस-बारह मेहमान एक साथ सो जाते थे।



वह कम्बल जिसमें एक साथ दस-बारह मेहमान सो जाते थे ।

आपकी सभा में हर आदमी को आने की आज्ञा थी, लेकिन बादशाहों का आना मना था। आप कहते थे कि मेरे घर के दो दरवाजे हैं। अगर एक दरवाजे से बादशाह अंदर आयेंगे तो दूसरे दरवाजे से मैं बाहर चला जाऊंगा।

तुम शायद सोचो कि बादशाहों को जमाअतखाने में आने की आज्ञा इसलिए नहीं होगी कि हजरत निजामुद्दीन उनसे नफरत करते होंगे। लेकिन बात ऐसी नहीं थी। किसी से नफरत करना तो उन्होंने सीखा ही नहीं था।

आप बादशाहों को इसलिए नापसन्द करते थे कि अधिकांशतः शासक जाति-धर्म से दूर होते थे। जोर-जबर्दस्ती से, युद्ध करके बादशाह बन जाते थे। खुदा के बन्दों को सताते थे और हमेशा सज-धजकर रहा करते थे।

हजरत की आदतों और अच्छी बातों का एक बादशाह अलाउद्दीन खिलजी पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने अपने सभी बुरे काम छोड़ दिए।

आप छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, हिन्दू-मुसलमान, बादशाह-फकीर में कोई अंतर न समझते थे। उनके दरवाजे हर एक के लिए खुले थे।

दक्षिण की रियासत देवगढ़ (अब दौलताबाद) का राजकुमार आपका नाम सुनकर, आपसे मिलने आया। हजरत ने उसका बड़े प्रेम से स्वागत किया और नौकरों से कहा कि उसे लंगरखाने में ले जाकर भोजन कराया जाये। आपके पास जगह-जगह से जो धन आता, उससे गरीबों को मुफ्त भोजन कराया जाता था। ऐसे खाने को लंगर कहा जाता है। यह खाना हर समय पकता रहता था। कौन जाने, कब कोई भूखा आ आये। यह खाना बड़ी-बड़ी देगचियों में बनाया जाता था और इसमें दाल, शोरबा, खिचड़ी और दूसरी चीजें भी होती थीं।

राजकुमार जब लंगरखाने में जाने लगा तो हजरत ने नौकरों को कहा कि इन लोगों में अलग-अलग बर्तनों में खाने की रीति है। आज सभी लोगों को अलग बर्तनों में खाना दो। किसी दूसरे धर्म के आदमी का मन रखने और उसके धर्म का आदर करने का यह कितना अच्छा उदाहरण था। हजरत निजामुद्दीन न तो किसी का दिल तोड़ते थे और न किसी के धर्म को बुरा समझते थे।

अस्सी-नब्बे बरस की उम्र में भी हजरत अपने तीन मंजिले मकान की

सीढ़ियां उतरकर, चेलों के साथ खुदा की याद करते थे और उन्हें अच्छी-अच्छी बातें बताया करते।

हजरत को कव्वाली सुनना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन वैसी कव्वाली अब नहीं हुआ करती। आजकल तो हू-हा ज्यादा होती है। हजरत निजामुद्दीन के समय में आपके सबसे चहेते चेले हजरत अमीर खुसरो ने ताली के साथ कव्वाली गाने का ढंग निकाला था।

बादशाह गयासुद्दीन तुगलक को कव्वाली से बहुत घृणा थी और वह हजरत से नाराज रहता था।

जिस वक्त तुगलकाबाद का किला बन रहा था, उन दिनों आप खुदा के बन्दों के लिए एक गहरी बावड़ी बनवा रहे थे।

बादशाह ने मजदूरों को हुक्म दिया कि कोई भी मजदूर बावड़ी बनाने न जाये, क्योंकि किला पहले तैयार होना जरूरी है। लेकिन गयासुद्दीन तुगलक यह जानकर हैरान हो गया कि मजदूर दिन के वक्त तो किला बनाने में लगे रहते थे और रात को दीपक की रोशनी में बावड़ी बनाते थे। मिट्टी के बड़े बर्तनों में ढेर सारा तेल भर लिया जाता था और फिर उनमें रूई की बत्तियां डालकर दीपक जलाये जाते थे।

बादशाह को जब यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ। उसने आज्ञा दी कि तेल बेचना बन्द कर दिया जाये। उस समय तक कुएं में पानी निकल आया था।

हजरत निजामुद्दीन ने अपने खास चेले हजरत नसीरुद्दीन को आज्ञा दी कि बावड़ी के पानी को बर्तनों में भरकर तेल की तरह जलाया जाये।

सच्चे लोग थे। सच्चा जमाना था।

खुदा की कुदरत से पानी तेल की तरह जलने लगा। उस दिन से आपके खास चेले नसीरुद्दीन "रोशन चिराग दिल्ली" के नाम से मशहूर हो गये। उनकी मजार दिल्ली में कालकाजी के पास है और अब यह बस्ती "रोशन चिराग दिल्ली" के नाम से जानी जाती है।

बादशाह गयासुद्दीन तुगलक अपने इस अपमान पर चुप नहीं हुआ।

बादशाह ने बंगाल से आदेश भेजा कि हजरत निजामुद्दीन को चाहिए कि मेरे दिल्ली आने से पहले ही शहर छोड़कर कहीं चले जाएं।

हजरत ने उस आदेश पर फारसी भाषा में यह वाक्य लिखकर लौटा दिया, "अभी दिल्ली दूर है!"



मजदूर रात के वक्त दीपक की रोशनी में बावड़ी बनाते थे ।

बादशाह के लिए सचमुच दिल्ली दूर ही रही। वह अफगानपुर में महल के नीचे दब कर मर गया। दिल्ली आ ही न सका।

आपने गयासुद्दीन तुगलक के बारे में एक दिन कहा था कि जिस शहर में उस जैसे लोग बसते हैं, वह भला कैसे आबाद रह सकता है। आपके ये शब्द सच होकर रहे। उसके बेटे मुहम्मद तुगलक ने अपनी बेवकूफी से दिल्ली को बिलकुल उजाड़कर, अपनी नयी राजधानी दौलताबाद बना ली। तुमने यह घटना इतिहास की किताबों में भी पढ़ी होगी।

हजरत निजामुद्दीन के जमाअतखाने में कई कमरे थे जो गोदामों का काम देते थे। किसी में अनाज की बोरियां रखी रहतीं, किसी में खजूर के ढेर लगे रहते और किसी में दाल-चावल आदि। हजरत के सेवक ख्वाजा इकबाल की देखभाल में सामान खरीदा जाता था।

एक बार एक अफगान सौदागर के यहां हिसाब में चांदी के सौ सिक्के बाकी रह गये। सौदागर वह लौटा न सका। ख्वाजा इकबाल ने सौदागर को पकड़कर एक कमरे में बन्द कर दिया, और उसके पैरों में जंजीर डाल दी जिससे वह भाग न सके।

हजरत निजामुद्दीन जंजीर की झंकार सुनकर नीचे आये और उस सौदागर को देखा। आपको इस घटना की कोई खबर न थी।

सौदागर ने प्रार्थना की कि उसे इस मुसीबत से निकला जाये।

हजरत अपने नौकर पर बहुत नाराज हुए, और उनसे कहा कि यह माल तुम्हारा नहीं, अल्लाह का है। अल्लाह के बन्दे इसे खाते हैं। कुछ मैं खाता हूं और कुछ तुम भी खाते हो। अगर इस सौदागर ने भी खा लिया तो क्या गजब हो गया? इसे अभी छोड़ दो।

जबतक लुहार ने आकर सौदागर की जंजीर न काट डाली, आप वहीं खड़े रहे।

आपकी दया का अनुमान इस बात से भी लग सकता है कि जब आप गयासपुर में थे तो वहां के मकानों में आग लग गयी।

मई का महीना था। दोपहर का समय और चिलचिलाती धूप!

आपको खबर मिली तो आप जमाअतखाने की छत पर चढ़ गये और कई घन्टे गरीबों की छतें जलती हुई देखते रहे। आग की गर्मी से आपका चेहरा लाल-सुर्ख हो गया। आपको बहुत दुःख हुआ।

जब आग बुझने लगी तो आप नीचे आये और सेवक इकबाल को आज्ञा दी कि गांव में जाकर जलनेवाले घरों की गिनती करो और हर घरवाले को चांदी के सिक्के, ठन्डे पानी की एक सुराही और दो-दो रोटियां भिजवाओ। यह काम वही आदमी कर सकता है जिसके मन में लोगों के लिए प्यार हो, जो सबको अपना समझता हो और जो खुदा से हर समय डरता हो।

हजरत निजामुद्दीन का जीवन हमारे लिए एक बहुत बड़ी शिक्षा है। उन्होंने दुनिया की तड़क-भड़क से दिल न लगाया, उन्होंने दुनियावालों को प्यार किया। उन्होंने किसी को तकलीफ न दी। कहने को तो वे एक दरवेश यानी फकीर थे, लेकिन दुनिया के बड़े-बड़े बादशाहों से भी बड़े थे।

आप कहते थे कि आदमी वही है जो दूसरे आदमी की जरूरतें पूरी करता हो, और उसकी तकलीफ को अपनी तकलीफ समझता हो। खुदा तक पहुंचने के बहुत से रास्ते हैं और सभी धर्म आदमी को खुदा तक ले जाते हैं। लेकिन खुदा तक पहुंचने का सही रास्ता यह है कि दूसरे दिलों को खुश रखो। उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ।

अगर कोई तुम्हारे रास्ते में कांटे बिछाये और जवाब में तुम भी उसके रास्ते में कांटे बिछा दो, तो यह अच्छी बात न होगी। इस तरह तो दुनिया में फूलों की जगह कांटे-ही-कांटे हो जायेंगे।

आपने यह भी कहा कि बेकार न रहो। कुछ नहीं तो बुजुर्गों की किताबें ही पढ़ा करो। हर वक्त खुदा से पापों की क्षमा मांगते रहो। किसी का हक या हिस्सा खाया हो तो उसका भाग उसे वापस दो। किसी को बुरा कहा हो तो उससे क्षमा मांगो।

दुनिया में न कोई जिंदा रहा है, न रहेगा। हमेशा जिंदा रहनेवाली जात तो सिर्फ खुदा की है। हजरत निजामुद्दीन भी इसी तरह २ अप्रैल सन १३२५, बुधवार के दिन सुबह लगभग सात बजे कोई नब्बे बरस की उम्र में दुनिया से चले गये।

लाखों लोग आपके जनाजे के जुलूस में गये। उनमें शहंशाह तुगलक भी था जो सवारी से उतरकर जनाजे को कंधा देता हुआ, दूरतक पैदल गया। आपके



यह काम वही आदमी कर सकता है जिसके मन में
लोगों के लिए प्यार हो ।

गुरू हजरत बाबा फरीदुद्दीन ने आपको शिष्य बनाते समय कहा था कि मैंने ऐसा पेड़ लगाया है, जिसकी छाया में खुदा के बन्दे आराम पायेंगे।

यह बात ६५५ साल बीत जाने के बाद, आज भी सच है। आज हर जाति-धर्म के लोग हजरत निजामुद्दीन के मजार पर, जो नयी दिल्ली में हुमायूं के मकबरे के सामने है, जाते हैं। आपसे अपने लिए प्रार्थना करते हैं। वे जानते हैं कि आप अल्लाह के प्रिय बन्दे हैं, इसलिए अल्लाह आपकी साक्षी जरूर स्वीकार करेगा। लोग इसी इरादे से आपकी दरगाह में लगातार जाते रहते हैं।

हमें हजरत निजामुद्दीन के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। उनके बताये रास्ते पर चलना चाहिए। आपस में प्रेम और भाईचारा रखने का प्रचार करना चाहिए। उनके ये शब्द हमेशा याद रखने चाहिए, "अगर तुम दूसरों के रास्ते में कांटे बिछाओगे और वह भी जवाब में ऐसा ही करेगा तब तो इस दुनिया में कांटे-ही-कांटे हो जायेंगे।"

यह बात भी समझने लायक है, "मुझे चाकू नहीं, सुई दो। मैं काटना नहीं, जोड़ना जानता हूं।"

हजरत निजामुद्दीन औलिया के इन उपदेशों पर अगर हम सच्चे दिल से चलें तो क्या हम अच्छे इंसान न बन जायेंगे? ●

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

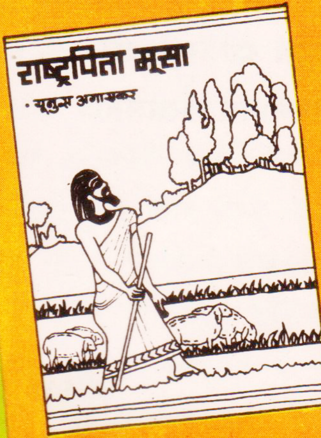
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी । इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके । वह भाषा है हिन्दुस्तानी ।

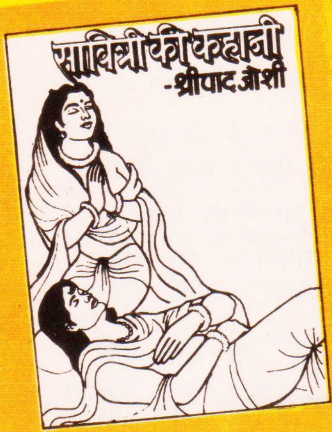
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है । हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी ।

बच्चों की कहानियां











एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली - ११० ०५५